<u>समाजशास्त्र एवं अन्य विज्ञानों का सम्बन्ध</u>

*** डॉ0 सत्या मिश्रा**

विषयवस्तु के आधार पर विज्ञानों को दो भागों में वर्गीकृत किया जाता है। एक, प्राकृतिक विज्ञान तथा दूसरा, सामाजिक विज्ञान। प्राकृतिक विज्ञान प्राकृतिक प्रघटनाओं तथा शक्तियों के अध्ययन से संबंधित हैं जबकि सामाजिक विज्ञान सामाजिक प्रघटनाओं का अध्ययन करते हैं तथापि अंतिम रूप से ज्ञान की दोनों ही शाखाएं नये नियमों की खोज तथा उपलब्ध ज्ञान के मानव कल्याण के उपयोग से संबंधित है, विषयवस्तु तथा अध्ययन पद्धति की दृष्टि से सभी प्रकृतिक विज्ञान आपस में तथा विभिन्न सामाजिक विज्ञान पारस्परिक रूप से एक-दूसरे पर आश्रित हैं। समाजशास्त्र तथा अन्य सामाजिक विज्ञानों के मध्य पारस्परिक संबंधों पर विभिन्न समाजशास्त्रियों ने पृथक-पृथक दृष्टिकोण प्रतिपादित किये हैं।

समाजशास्त्र सम्पूर्ण सामाजिक जीवन का सामान्य अध्ययन करने वाला विज्ञान है इसलिए समाजशास्त्र के संस्थापक पिता ऑगस्ट कॉम्ट ने इसे एक मात्र सामाजिक विज्ञान अथवा 'विज्ञानों के विज्ञान' की संज्ञा दी है। स्पेसर ने अन्य विज्ञानों का समन्वय मानते हुए समाजशास्त्र को 'संरक्षक विज्ञान' कहा है तथापि सभी विज्ञानों का अपना पृथक तथा स्वतंत्र अस्तित्व एवं महत्व होता है और वे पारस्परिक रूप से निर्भर बने हुए हैं।

---

* एसोसिएट प्रोफेसर

समाजशात्र विभाग

नारी शिक्षा निकेतन पी0जी0 कॉलेज, लखनऊ।

समाजशास्त्र तथा अन्य विज्ञानों एवं सामाजिक दर्शन के मध्य पारस्परिक संबंधों को पी0 जिसबर्ट ने 'फंडामेंटल्स ऑफ सोशियोलॉजी' नामक पुस्तक में निम्नांकित चित्र द्वारा स्पष्ट किया है :-

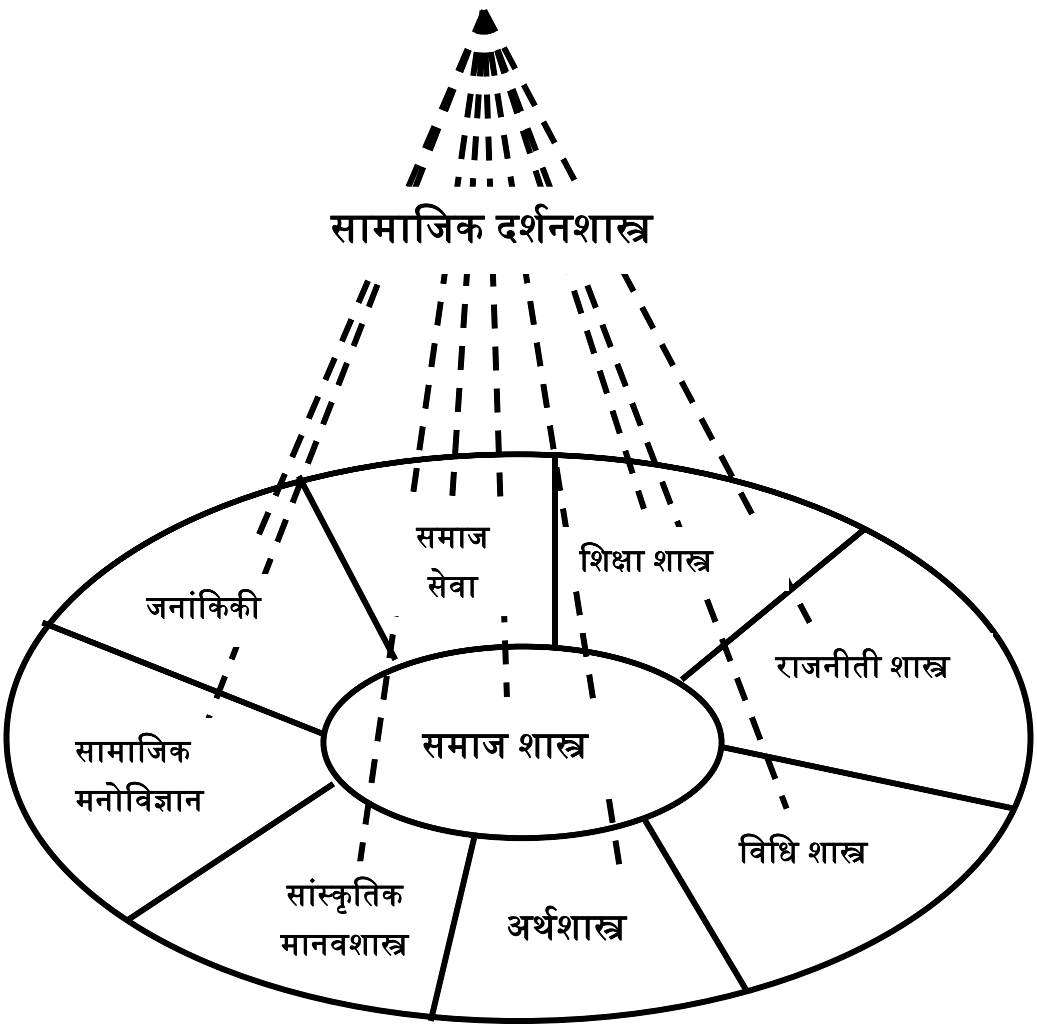

समाजशास्त्र तथा अन्य विज्ञानों के मध्य संबंध को निम्नलिखित रूप से स्पष्ट किया जा सकता है-

<u>समाजशास्त्र तथा मानवशास्त्र</u> :-

मानवशास्त्र आदिकालीन अथवा आदिम मानव के शारीरिक, सामाजिक, सांस्कृतिक विकास तथा उसके व्यवहारों एवं उद्विकास सम्बन्धी विशेषताओं का वैज्ञानिक अध्ययन करने वाला विज्ञान है। हर्ष कोवित्स ने 'मैन एण्ड हिज़ वर्क' नामक पुस्तक में इसे 'मनुष्य एवं उसके कार्यों का अध्ययन

करने वाला विज्ञान’ माना है। तथापि यह समाजशास्त्र से गहन रूप से संबंधित है अतः ’क्रोबर’ ने समाजशास्त्र तथा मानवशास्त्र को जुड़वाँ बहनों की संज्ञा दी है। अंतिम रूप से दोनों विज्ञान सामाजिक संबंधों एवं संगठन का अध्ययन करते हैं। ये सिद्धान्त जितने महत्वपूर्ण मानवशास्त्र में हैं उतने ही समाजशास्त्र में भी; इसे दृष्टिगत रखते हुए ही हॉबेल ने स्पष्ट किया है कि ’विस्तृत अर्थों में समाजशास्त्र और मानवशास्त्र बिल्कुल एक समान है।’ समाजशास्त्र मानवशास्त्र में प्रयुक्त की जाने वाली अध्ययन विधियों यथा क्षेत्रकार्य, सहभागी अवलोकन, संरचनात्मक प्रकार्यवाद तथा तुलनात्मक पद्धति इत्यादि का बड़े पैमाने पर अपने अध्ययनों में प्रयोग करता है। मानवशास्त्र एवं इसकी विभिन्न शाखायें यथा भौतिक मानवशास्त्र, प्रागैतिहासिक मानवशास्त्र, सांस्कृतिक मानव शास्त्र, सामाजिक मानवशास्त्र तथा व्यावहारिक मानवशास्त्र अन्ततः विभिन्न स्तरों पर मानव संस्कृति का वैज्ञानिक अध्ययन करती है और समाजशास्त्र भी सम्पूर्ण मानव समाज के वैज्ञानिक अध्ययन से संबंधित है इस प्रकार से दोनों विषयों की विषयवस्तु भी समान है जबकि मानवशास्त्र आदिम एवं सरल सामाजिक व्यवस्थाओं में छुपे हुये जटिल तथ्यों की खोज समाजशास्त्रीय अध्ययन पद्धतियों की सहायता से करता है।

वर्तमान समय में जैसे-जैसे आदिम एवं आधुनिक समाजों में परिवर्तन आता जा रहा है मानवशास्त्र एवं समाजशास्त्र में निकटता आई है। आदिम एवं सरल समाजों के मूल्यों में परिवर्तन तथा बढ़ती जटिलताओं के अध्ययन के संदर्भ में दोनों विषय समीप आ गये हैं। और समाजशास्त्र में तुलनात्मक समाजशास्त्र जैसी शाखाओं का जन्म हुआ है।

समाजशास्त्र तथा मानवशास्त्र दोनों विषय यद्यपि घनिष्ठ रूप से सम्बन्धित है लेकिन दोनों विषयों के मध्य कुछ मूलभूत विभिन्नतायें भी विद्यमान हैं यथा :-

1) समाजशास्त्र का जन्म औद्योगिक समाज के अध्ययन हेतु हुआ है अतः यह आधुनिक, जटिल समाजों के वैज्ञानिक अध्ययन से संबन्धित है जबकि मानवशास्त्र आदिम, सरल समाजों का वैज्ञानिक अध्ययन करने वाल विज्ञान है।

2) मौलिक रूप से दोनों विषयों की अध्ययन पद्धतियों में पर्याप्त विभिन्नता पाई जाती है। समाजशास्त्र में सामाजिक सर्वेक्षण, सांख्यकी तथा मापन पद्धतियाँ महत्वपूर्ण हैं जबकि मानवशास्त्र मूलतः क्षेत्रकार्य, सहभागी अवलोकन तथा नृजातिशास्त्रीय पद्धतियों पर आश्रित है।

<u>समाजशास्त्र तथा इतिहास</u> :-

इतिहास अतीत की घटनाओं का क्रमबद्ध तथा व्यवस्थित अध्ययन करने वाला विज्ञान है। राइट का मानना है कि ' इतिहास पुनर्निर्माण की उस विधि का अध्ययन करता है जिस पर वास्तविक रूप से घटनायें घटी हैं और उन घटनाओं का मनुष्य जाति की कहानी में क्या महत्व है इसका मूल्यांकन करने का प्रयत्न करता है।' इतिहास अतीत की उन घटनाओं के अध्ययन से सम्बन्धित है जो अतीत के समाज की विशिष्टताओं को स्पष्ट करती हैं इन्हीं के आधार पर समाजशास्त्र वर्तमान सामाजिक प्रघटनाओं का क्रमबद्ध अध्ययन करता है। इसे दृष्टिगत रखते हुए हॉवर्ड ने कहा है कि 'इतिहास अतीत का समाजशास्त्र है जबकि समाजशास्त्र वर्तमान समाज का इतिहास है।' इतिहास तथा इतिहास के दर्शन ने समाजशास्त्र के उदय को प्रभावित किया है। ऐतिहासिक पद्धति समाजशास्त्रीय प्रध्ययनों का आधार रही है।

समाजशास्त्र तथा इतिहास के बीच घनिष्ठ संबंधों को देखते हए 'वॉनबुलो' ने समाजशास्त्र को इतिहास से पृथक मानने से इन्कार कर दिया। इतिहास वर्तमान सामाजिक तथ्यों की प्रमाणिकता सिद्ध करने का प्रमुख आधार है। वर्तमान निष्कर्षों की तुलना अतीत के परिणामों से करके सामान्यीकरण किये जा सकते हैं। समाजशास्त्र विभिन्न समाजों के चरणबद्ध एवं क्रमिक विकास का अध्ययन ऐतिहासिक विधि के आधार पर करता है साथ ही अध्ययन सामग्री के लिए भी समाजशास्त्र की निर्भरता इतिहास पर बनी हुई है। अर्नाल्ड टॉयबनी का ' ए स्टडी ऑफ हिस्ट्री' नामक अध्ययन समाजशास्त्र में भी अत्यन्त महत्वपूर्ण है। इतिहास तथ्यों को प्रदान करता है तथा समाजशास्त्र उन्हे समन्वित करता है एवं व्याख्या करता है जबकि समाजशास्त्र इतिहास के

अध्ययनों को सामाजिक पृष्ठभूमि उपलब्ध कराता है। ऐतिहासिक समाजशास्त्र तथा सामाजिक इतिहास जैसी ज्ञान की शाखाएँ दोनो विषयों का परस्पर जोड़ती हैं।

समाजशास्त्र एवं इतिहास यद्यपि एक दूसरे क अत्यंत निकट एवं घनिष्ठ हैं तथापि उनमें पर्याप्त अन्तर भी विद्यमान हैं जोकि निम्न हैं :-

I. समाजशास्त्र का मुख्य उद्देश्य समाज तथा सामाजिक संबंधों मे समानता सामाजिक सिद्धान्तों का पता लगाना है जबकि इतिहास ऐतिहासिक घटनाओं का वर्णन मात्र है।
II. समाजशास्त्र भविष्य की ओर संकेत की क्षमता रखता है जबकि इतिहास अतीत के यथार्थ का निरूपण है।
III. पार्क का मानना है कि 'इतिहास जहाँ मानव अनुभवों और मानव प्रकृति का स्थूल विज्ञान है; समाजशास्त्र एक अमूर्त विज्ञान है।'

<u>समाजशास्त्र तथा अर्थशास्त्र</u> :-

अर्थशास्त्र जीवन के सामान्य क्रियाकलापों में व्यक्ति का अध्ययन है एक प्राकर से अर्थशास्त्र धन का, उसके तीनों रूपों उत्पादन, वितरण एवं उपभोग का अध्ययन करता है। यह जीवन की सामान्य दशाओं से सम्बन्धित उन आर्थिक क्रियाओं के विश्लेषण से सम्बन्धित है जिसका लक्ष्य भौतिक सुख, साधनों की प्राप्ति न होकर आर्थिक एवं सामाजिक कल्याण के लक्ष्य की प्राप्ति है।

आर्थिक तत्वों का प्रभाव समाज पर पड़ता है तथा सामाजिक वातावरण आर्थिक प्रक्रियाओं का निर्धारण करता है स्पष्ट है कि समाजशास्त्र तथा अर्थशास्त्र के मध्य गहन तथा घनिष्ठ संबंध है। 18वीं-19वीं शताब्दी में घटित नवीन आर्थिक प्रक्रियाओं तथा नये औद्योगिक समाज ने समाजशास्त्र के उदय की पृष्ठभूमि निर्मित की। समाजशास्त्र के उदय एवं विकास के प्रारम्भिक काल में इसका अध्ययन अर्थशास्त्र के अन्तर्गत किया जाता रहा है लेकिन आगे चलकर यह स्वतंत्र एवं पृथक विषय के रूप में विकसित हुआ। स्पेंसर, समनर, दुर्खीम, कार्ल मार्क्स एवं फैडरिक एंजिल्स, जे0एस0 मिल, पैरेटो तथा मैक्स वेबर के आर्थिक एवं सामाजिक सिद्धान्त दोनों

विषयों में समान रूप से महत्वपूर्ण हैं। समाजशास्त्र एवं अर्थशास्त्र दोनों अनेक विषयों का यथा- जनसंख्या वृद्धि, मलिन बस्तियों का उन्मूलन, पर्यावरण प्रदूषण, अतिनगरीकरण, निर्धनता, बेरोजगारी, बाल एवं परिवार कल्याण, ग्रामीण पुनर्निमाण इत्यादि का अध्ययन समान रूप से करते हैं। अर्थशास्त्री आर्थिक समस्याओं का हल सामाजिक प्रघटनाओं को दृष्टिगत रखते हुए करता है तथा समाजशास्त्र वे विशिष्ट तथ्य उपलब्ध कराता है जिसके आधार पर अर्थशास्त्र सामान्य नियमों का प्रतिपादन करता है अतएव सिल्वरमैन ने रेखांकित किया है कि 'सामान्य शब्दों में अर्थशास्त्र समाजशास्त्र के पैत्रक विज्ञान जो सभी सामाजिक संबंधों के सामान्य नियमों का अध्ययन करता है की एक शाखा समझा जा सकता है।' थॉमस ने भी अर्थशास्त्र को 'समाजशास्त्र के व्यापक विज्ञान की एक शाखा' माना है। अर्थशास्त्र एवं समाजशास्त्र के मध्य घनिष्ठता इसकी द्योतक है कि समाजशास्त्र में एक नवीन शाखा 'आर्थिक जीवन का समाजशास्त्र' अथवा 'आर्थिक समाजशास्त्र' का जन्म हो चुका है। विकास का समाजशास्त्र तथा व्यवहारिक समाजशास्त्र जैसी शाखायें दोनों विषयों को निकट लाती हैं। आर्थिक तत्व सामाजिक जीवन को निर्धारित करते आये हैं अतएव अनेक समाजशास्त्री समाजिक संस्थाओं एवं आर्थिक प्रक्रियाओं का अध्ययन करते रहे हैं।

समाजशास्त्र एवं अर्थशास्त्र यद्यपि अत्यंत निकट हैं तथापि उनके मध्य कुछ अंतर भी हैं-

I. समाजशास्त्र सामान्य विज्ञान है जबकि अर्थशास्त्र विशिष्ट विज्ञान है।
II. अर्थशास्त्र तथा समाजशास्त्र की अध्ययन पद्धतियाँ भिन्न-भिन्न हैं। अर्थशास्त्र मूलतः आगमन- निगमन पद्धति पर आश्रित है जबकि समाजशास्त्र प्रकार्यात्मक, तुलनात्मक पद्धति पर।
III. दोनों विषयों के दृष्टिकोण में अंतर है। समाजशास्त्र का परिप्रेक्ष्य सामाजिक है जबकि अर्थशास्त्र का आर्थिक।
IV. समाजशास्त्र का दृष्टिकोण व्यापक तथा अर्थशास्त्र का दृष्टिकोण सीमित है।

<u>समाजशास्त्र तथा राजनीतिक शास्त्र</u> :-

राजनीतिशास्त्र राज्य के स्वरूप, महत्व, संगठन, शासन सिद्धान्तों एवं नीतियों की व्याख्या करने वाला सामाजिक विज्ञान है। जिसबर्ट के अनुसार 'राजनीतिशास्त्र उन सामाजिक समूहों के अध्ययन से सम्बन्धित है जो राज्य की स्वायत्तता के अन्तर्गत संगठित हैं। राज्य को एक सामाजिक संस्था के रूप में भी देखा जाता है।' राजनीतिशास्त्र तथा राजनीतिक दर्शन समाजशास्त्र के उदय का प्रमुख बौद्धिक कारक रही हैं इसलिए मॉरिस जिंसबर्ग ने कहा है कि 'ऐतिहासिक दृष्टि से समाजशास्त्र की मुख्य जड़ें राजनीतिक दर्शन में हैं। प्लेटो की पुस्तक 'रिपब्लिक' तथा अरस्तू की पुस्तक 'पॉलिटिक्स' समाजशास्त्र एवं राजनीतिशास्त्र की सर्वांगीण पुस्तकों के रूप में जानी जाती हैं। विषयवस्तु एवं अध्ययन पद्धति की दृष्टि से दोनों विषय अन्योन्याश्रित हैं। एक स्वतंत्र विषय के रूप में राजनीशास्त्र समाजशास्त्र से प्राचीन विषय है तथापि राजनीतिशास्त्र समाजशास्त्र के एक भाग के रूप में राजनीतिक संगठन एवं शासन के नियमों का अध्ययन करता है। सामाजिक जीवन पर राजनीति के प्रभावों का अध्ययन करने हेतु समाजशास्त्र में एक शाखा 'राजनीतिक समाजशास्त्र' का विकास हुआ है। यह शाखा दोनों विषयों के मध्य सेतु का कार्य करती है। राजनीतिक एवं सामाजिक प्रक्रियायें एक-दूसरे को प्रभावित करती हैं। अतः इनके प्रभावों का अध्ययन दोनों ही विषय करते हैं। राजनीतिशास्त्र एवं समाजशास्त्र की पारस्परिक निर्भरता को दृष्टिगत रखते हुए गिडिंग्स ने कहा है कि 'जिस व्यक्ति को पहले समाजशास्त्र के मूल सिद्धान्तों का ज्ञान न हो उसे राज्य के सिद्धान्त की शिक्षा देना वैसा ही है जैसे न्यूटन के गति-सिद्धान्त को न जानने वाले व्यक्ति को खगोलशास्त्र या ऊष्मा गति की शिक्षा देना।'

कॉम्ट एवं सपेंसर ने इन दोनों विषयों में भेद नहीं किया है जबकि जी0ई0जी0 कॉलिन ने 'राजनीतिशास्त्र व समाजशास्त्र को 'एक ही आकृति के दो रूपों' की संज्ञा दी है।

यद्यपि राजनीतिक विज्ञान एवं समाजशास्त्र पारस्परिक रूप से सह-सम्बन्धित हैं तथा उनके मध्य पारस्परिक भिन्नता भी है यथा :-

1) समाजशास्त्र व्यापक तथा सामान्य विज्ञान है जबकि राजनीतिशास्त्र का क्षेत्र सीमित है एवं यह विशिष्ट विज्ञान है।
2) समाजशास्त्र की अध्ययन वस्तु सामाजिक प्राणी है जबकि राजनीतिशास्त्र का केन्द्र बिन्दु राजनीतिक प्राणी है।
3) दोनों विषयों के उपागमों में भिन्नता है।
4) समाजशास्त्र संगठित एवं असंगठित दोनों प्रकार के समुदायों का अध्ययन करता है जबकि राजनीतिशास्त्र मात्र संगठित समुदायों के अध्ययन से संबंधित है।

<u>समाजशास्त्र एवं मनोविज्ञान</u> :-

मनोविज्ञान मानव के मस्तिष्क, मानसिक दशाओं एवं प्रक्रियाओं के अध्ययन का विज्ञान है। यह मानवीय व्यवहार तथा मानव की प्रकृति के अध्ययन से सम्बन्धित है जिसमें बोध, संज्ञान एवं अधिगम तीनों मानसिक प्रक्रियाओं का विश्लेषण किया जाता है। मनोंविज्ञान को सामान्यतः दो भागों में वर्गीकृत किया जाता है- विशुद्ध मनोविज्ञान तथा सामाजिक मानोविज्ञान। सामाजिक मनोविज्ञान समाजशास्त्र तथा मनोविज्ञान के मध्य की कड़ी है जो दोनों विषयों को परस्पर जोड़ती है। लापियर एवं फ्रांसवर्थ का कथन है कि ' सामाजिक मनोविज्ञान का समाजशास्त्र एवं मनोविज्ञान से वही सम्बन्ध है जो जीव-रसायनशास्त्र का जीवशास्त्र और रसायनशास्त्र से है।' मनोविज्ञान एवं समाजशास्त्र के मध्य घनिष्ठता को देखते हुए कार्ल पिर्यसन ने दोनों विषयों में भेद का स्वीकार नहीं किया है। मैकाइवर ने भी दोनों विषयों को परस्पर आश्रित माना है। फ्रायड तथा मैक्डूगल के अध्ययन, समाजीकरण के सिद्धान्त तथा अपराध के मनोवैज्ञानिक विश्लेषण दोनों ही विषयों में समान रूप से महत्वपूर्ण हैं। सामाजिक दशाएँ मनुष्य की सोच एवं क्रियाओं को निर्धारित करती हैं तथा सामाजिक संबंधों एवं सामाजिक जीवन की दशाओं का अध्ययन मनुष्य की मूल प्रवृत्तियों, इच्छाओं एवं उद्देश्यों को समझे बिना नही किया जा सकता फलतः दोनों विषयों की पारस्परिक आश्रितता बनी हुई है। समाजशास्त्रीय तथा मनोवैज्ञानिक सिद्धान्त एक-दूसरे की विशिष्टताओं को उद्‌घाटित करने हैं। कॉम्ब ने दोनों विषयों की सीमाओं को एक दूसरे के इतने

निकट माना है कि इन्होंने एक नवीन विधा 'सूक्ष्म समाजशास्त्र' की कल्पना की है। समाजीकरण, व्यक्तित्व, नेतृत्व, प्रचार, जनमत, भीड़ व्यवहार, सामाजिक जीवन, अनुकरण, संकेत तथा सामाजिक अन्तर्क्रिया जैसे विषयों का अध्ययन दोनों विधाओं में समान रूप से किया जाता है।

समाजशास्त्र तथा मनोविज्ञान सामाजिक विज्ञान की शाखाएँ हैं तथा पारस्परिक रूप से निर्भर भी हैं लेकिन दोनों विधाओं में कुछ महत्वपूर्ण अंतर भी हैं यथा :-

I. दोनों विषयों की विषयवस्तु में अंतर विद्यमान है। क्लाइनबर्ग का मानना है 'समाजशास्त्री का मुख्य संबंध समूह व्यवहार से है जबकि सामाजिक मनोविज्ञान का सम्बन्ध समूह स्थिति में व्यक्ति के आचरण से है।
II. बोगार्डस के शब्दों में 'मनोविज्ञान मानसिक प्रक्रियाओं का अध्ययन करता है जबकि समाजशास्त्र सामाजिक प्रक्रियाओं का।'
III. दोनों विषयों के दृष्टिकोणों में भिन्नता है। समाजशास्त्र का दृष्टिकोण सामाजिक है जबकि मनोविज्ञान का वैयक्तिक।
IV. समाजशास्त्र सामान्य तथा व्यापक विज्ञान है जबकि मनोविज्ञान सीमित तथा विशिष्ट विज्ञान है।
V. मनोविज्ञान में प्रयोगात्मक विधि पर बल दिया जाता है जबकि समाजशास्त्र में प्रयोग संभाव नहीं हैं।

<u>समाजशास्त्र तथा दर्शनशास्त्र</u> :-

समाज की दार्शनिक व्याख्या प्राचीनकाल से प्रचलित रही है। दर्शनशास्त्र वह विद्या है जो तर्क के आधार पर सम्पूर्ण विश्व की रचना की व्याख्या करती है। काण्ट ने दर्शनशास्त्र को 'ज्ञान प्राप्ति की कला का विज्ञान एवं उसकी समीक्षा' की संज्ञा दी है। 19वीं शताब्दी की दार्शनिक चिंतन की धाराओं ने समाजशास्त्र के उदय एवं विकास को प्रभावित किया है। इतिहास के दर्शन तथा राजनीतिक दर्शन ने समाजशास्त्र के उदय के बौद्धिक कारणों के रूप में भूमिका निभाई तथा समाजशास्त्र को विषयवस्तु एवं अध्ययन पद्धतियाँ प्रदान कीं। सामाजिक दर्शन समाजशास्त्र तथा

दर्शनशास्त्र के मध्य की कड़ी है। दोनों विषय दो आधारों पर परस्पर संबंधित हैं- 1 कार्य तथा 2 उद्देश्य। समाजिक दर्शन का प्रमुख कार्य सामजिक जीवन के मौलिक सिद्धान्तों एवं धारणाओं का विश्लेषण करना है यह समाजशास्त्रीय मान्यताओं एवं सिद्धान्तों की सूचनात्मक समालोचना करता है तथा इसका उद्देश्य सामाजिक जीवन के सर्वोच्च मूल्यों एवं आदर्शों को प्रभावी बनाना तथा सामाजिक संदर्भ में उनका विश्लेषण भी है। इसे दृष्टिगत रखते हुए ही वीरकान्त का कहना है कि 'समाजशास्त्र मात्र दार्शनिक आधार पर ही उपयोगी बन सकता है।' बॉटोमोर के अनुसार समाजशास्त्र एवं दर्शनशास्त्र के मध्य विद्यमान संबंध को तीन स्तरों पर रेखांकित किया जा सकता है- प्रथम, विज्ञान के दर्शन के संदर्भ में समाजशास्त्र का भी एक दर्शन हो सकता है जो समाजशास्त्रीय अवधारणाओं, पद्धतियों एवं तर्कों का परीक्षण कर सके। द्वितीय, समाजशास्त्र का नैतिक एवं सामाजिक दर्शन से घनिष्ठ संबंध है क्योंकि दोनों की अध्ययन वस्तु मानव व्यवहार है जो मूल्यों द्वारा निर्देशित होता है तथा तृतीय, समाजशास्त्र प्रत्यक्षतः दार्शनिक विचारधारा की ओर अग्रसर होता है अर्थात् समाजशास्त्र दर्शनशास्त्रीय प्रश्नों के समाधान द्वारा दर्शनशास्त्र को प्रत्यक्ष योगदान दे सकता है।

समाजशास्त्र तथा दर्शनशास्त्र के मध्य निम्नलिखित अंतर चिन्हित किये जा सकते हैं :-

I. दोनों विषयों के परिप्रेक्ष्य में भिन्नता है। समाजशास्त्र का परिप्रेक्ष्य सामाजिक है, यह यथार्थ की वैज्ञानिक तार्किक व्यवस्था करता है जबकि दर्शनशास्त्र आध्यात्मिक है।
II. समाजशास्त्र की विषयवस्तु संकुचित है जबकि दर्शनशास्त्र की व्यापक है।
III. समाजशास्त्र एक विज्ञान है जबकि दर्शनशास्त्र की प्रकृति विज्ञान एवं कला से भिन्न दार्शनिक है।

<u>निष्कर्ष</u> :-

साराँशतः कहा जा सकता है कि समाजशास्त्र न तो अन्य सामाजिक विज्ञानों से सर्वया भिन्न एवं पृथक है और न ही पूर्णतः उन पर आश्रित है। विषय वस्तु तथा अध्ययन पद्धति के आधार पर सभी विषय पारस्परिक रूप से अन्योन्याश्रित हैं। बार्न्स एवं बेकर का यह कथन उचित है कि

'समाजशास्त्र अन्य सामाजिक विज्ञानों की न तो गृह स्वामिनी है और न दासी, बल्कि उनकी बहन है।'

समाजशास्त्र एक संगठित, समन्वित एवं सामान्य दृष्टिकोण प्रस्तुत करता है जबकि समकालीन विशेषाकरण के युग में सूक्ष्म विश्लेषण अपेक्षित हैं अतएव दोनों प्रकार के अध्ययनों की उपयोगिता एवं महत्व समान रूप से बना हुआ है। ज्ञान की कोई भी विधा श्रेष्ठ नहीं है अपितु समान है। सामाजिक जीवन में समग्रता एवं सम्बद्धता के अध्ययन से संबंधित होने के कारण सभी विषय परस्पर पूरक हैं।

सन्दर्भग्रन्थ :-

1) जिस्वर्ट, पी0, 1957, फंडामेंन्टल्स ऑफ सोशियोलॉजी, ओरिएंट लौंगमैन।
2) मैकाइवर, आर0 एम0 एवं पेज, चार्ल्स, एच0, 2002, 'सोसायटी', रवि ऑफसेट प्रिंटर्स (अनु0 जी0 विश्वेश्वरैया, रामपाल सिंह गौड़) एण्ड पब्लिशर्स प्रा0लि0, आगरा।
3) बॉटमोर, टी0वी0 (अनु0-गोपालप्रधान), 2004, समाजशास्त्र समस्याओं और साहित्य का अध्ययन, ग्रन्थ शिल्पी, दिल्ली) ।